दिल्ली-पांडव भवन(करोल बाग)। तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली बार एसोसिएशन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'ईज़ी मेडिटेशन फॉर बिज़ी लॉयर्स' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जिला न्यायाधीश संजय कुमार, बार एसोसिएशन के प्रधान एन. सी. गुप्ता, ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य सीनियर एडवोकेट्स।

पदमपुर-ओडिशा। विधानसभा विधायक प्रदीप पुरोहित को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुजाता।

लखनऊ-कानपुर रोड। लेफ्टिनेंट जनरल जे.के. शर्मा,सी.ओ.एस.,सेंट्रल कमांड तथा उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. दिव्या, ब्र.कु. माधुरी व अन्य।

बाली-इंडोनेशिया। हिमालय गीता पाठशाला,डेनपसर में डॉक्टर्स के लिए आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डॉक्टर्स के साथ ब्र.कु. जानकी तथा अन्य।

दसुआ-पंजाब। रक्षाबंधन के अवसर पर डी.एस.पी. अशरू कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मधु।

दिल्ली-बवाना। असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ पुलिस को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चन्द्रिका।

अपनी शक्तियों को एक दिशा दें

- गतांक से आगे...

जीवन में हम भी अगर परिवार में एक होकर रहते हैं तो पारिवारिक समस्याओं को कई तरह से सुलझा सकते हैं। हमें जीवन जीने के लिए भी आसानी हो जाती है। इकट्ठे होते हैं तो उस बंडल को तोड़ने की क्षमता किसी की भी नहीं होती है। इस तरह से जब ये बात उन बच्चों को समझ में आ गयी, तब से उन्होंने निश्चय कर लिया कि आज के बाद हम कभी भी जीवन में लड़ेंगे नहीं। एक-दूसरे से अलग नहीं होंगे। एक होकर के हम चलेंगे।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

तो ये जीवन जीने की कला है कि जब हम अपने मन, वचन, कर्म को एक कर देंगे, तो जीवन में जो शक्ति आयेगी, उस शक्ति के आधार से कोई हमें तोड़ नहीं सकता है। हम जीवन में कभी दिलशिकस्त नहीं होंगे। हम जीवन में कभी भी उदासी में आकर नहीं टूटेंगे। हर रीति से हम अपने आपको सशक्त बनाकर के चलते चलेंगे। जीवन जीना आसान हो जायेगा। अगर ये तीनों शक्तियाँ अलग-अलग दिशा में चली गईं तो इन शक्तियों को तोड़ना, इन शक्तियों को भ्रमित करना आसान है। कोई भी हमारे मन को भ्रमित कर देगा। कोई हमारी वाणी को भ्रमित कर देगा और कोई हमारे कर्म को भ्रमित कर देगा। इस प्रकार जीवन में दिलशिकस्तपना, जीवन से हारने का अनुभव होगा और हम टूटने लगेंगे। ये जीवन को तोड़ने की विधि है। यही आज संसार में हो गया है कि मनुष्य किस प्रकार छोटे-छोटे बच्चों को भी भ्रमित करते हैं। जवानों को भ्रमित करते हैं। पथ से हटा देते हैं। इसलिए गीता में हमें भगवान ने यही सीख दी ''ओम तत्सत्'' यानि मन, वचन, कर्म को एक करते हुए समस्त तत्व के अंदर सत्य भाव, श्रेष्ठ भाव और दृढ़ता को ले आयें तो जीवन में कोई उसको तोड़ नहीं सकता। इस तरह ये हमारा जीवन है और जीवन जीने की कला है। अब हम थोड़ी देर के लिए मेडिटेशन करेंगे और अपने मन को परमात्मा में एकाग्र करेंगे। जिस प्रकार मेडिटेशन की विधि हमने गीता के पाँचवे और छठे अध्याय में आरंभ की। जहाँ परमात्मा ने हमें बताया कि किस प्रकार अपने मन को स्थित करना है। आत्म-भाव या आत्म-स्थिति में जब मन को स्थित कर लेते हैं तो परमात्मा की याद सहज स्वाभाविक आती है। सामने वो दिव्य स्वरूप है, परमात्मा परम प्रकाश, तेजोमय परंतु जैसे कहा चंद्रमा के समान शीतल प्रकाश से सम्पन्न है। जो असीम प्यार की वर्षा करते हैं। हम अपने मन के अंदर अंतर्चक्षु से उस दिव्य स्वरूप को निहारते जायें और उसका अनुभव करते जायें। - क्रमशः

माउण्ट आबू। गरीबों को कम कीमत पर अच्छी दवाई मुहैया कराने हेतु ग्लोबल अस्पताल में 'प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना केन्द्र' का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए एस.डी.ओ. एवं एस.डी.एम. निशांत जैन,आई.ए.एस.। साथ हैं ग्लोबल अस्पताल निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय
ओमशान्ति मीडिया,
संपादक - ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,
शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

ये जीवन है...

जीवन अपने आप में, न तो सुख है , न दुःख,
आप कैसे देखते हैं,
सब इस बात पर निर्भर है।
सुख और दुःख कोई तथ्य नहीं है,
आपके देखने का ढंग है।
वही बात आपको सुख दे सकती है,
दूसरे के लिए दुःखदायी हो सकती है और
उसी बात में कोई निरपेक्ष भी रह सकता है।
ऐसा भी हो सकता है कि जो बात आज आपके लिए
सुखमय है, कल दुःख का कारण हो जाए,
इसलिए सुख-दुःख से ऊपर उठकर तटस्थ हो जाएं,
और दोनों में आनंद लें।

ख्यालों के आईने में...

निमित्त भाव ?

आप सिर्फ निमित्त मात्र हैं इस संसार में। यह संसार एक रंगमंच है। सभी मनुष्य आत्मायें अपना-अपना पार्ट प्ले कर रही हैं। जो आत्मा अपना पार्ट निमित्त भाव से प्ले कर रही है, वो आनंद में है।

याद रखें :- जीवन में सच्चा आनंद और शांति तो सिर्फ व सिर्फ ईश्वरीय ध्यान, परमात्म याद में ही है। चाहे अरबों-खरबों इकट्ठा कर लो, फिर भी सच्चा आनंद और शांति कभी न मिलेगी।

हारना तब आवश्यक हो जाता है,
जब लड़ाई ''अपनों'' से हो।
और जीतना तब आवश्यक हो जाता है,
जब लड़ाई ''अपने आप'' से हो।